भूमिका

प्रस्तुत शोध अध्ययन को आधुनिकता के परिणाम स्वरूप उपज रहे मूल्य संकट के निवारण हेतु एक महत्त्वपूर्ण सुझाव के रूप में देखा जा सकता है। भौतिकता की दूषित वायु ने सम्पूर्ण मानवता को हाशिये पर लाकर खड़ा कर दिया है। दया, उदारता, प्रेम, अहिंसा, सत्याग्रह आदि बातें किताबी महसूस होने लगी हैं। हिंसा ने तो मानव के मूल धर्म के रूप में जगह बना ली है। गांधी जैसे महात्मा मात्र हास्य फ़िल्में बनाने के विषय बनकर रह गए हैं। शायद आइन्स्टाइन की कही गयी बात, आने वाली पीढियां शायद ही यह भरोसा करें कि हाड़-मांस की शरीर वाला ऐसा भी कोई पुतला धरती पर रहा होगा, के चरितार्थ होने का समय आ गया है। हम सभी जानते हैं कि भौतिकता से पनप रहे इन संकटों का एक मात्र उपचार मानव मूल्यों में छिपा है। मानव मूल्यों की स्वीकार्यता के प्रमाण के लिए शायद समय के साथ मूल्यों के बारे में बढ़ रहे अध्ययनों की संख्या पर्याप्त होगी। ऐसे में मूल्य और गांधी को केंद्र में रख कर किया गया यह अध्ययन अति प्रासंगिक है। यह शोध अध्ययन पूर्णतः गुणात्मक विधियों का पालन करता है तो किंचित यह संभव है कि अनजाने में या भूलवश शोधार्थी की मनोवृत्तियों के प्रभाव ने शोध को प्रभावित किया हो। ऐसे में शोधार्थी का गांधी के प्रति विचार एवं मनोवृत्ति को स्पष्ट करना भी अति आवश्यक है। गांधी या मूल्य से सम्बंधित शोधार्थी का यह प्रथम अध्ययन है। अध्ययन के पूर्व शोधार्थी ने गांधी के सम्पूर्ण साहित्य में मात्र गांधी की आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' का अध्ययन लगभग पांच वर्ष पूर्व किया था। इसके अतिरिक्त गांधी के विषय में शोधार्थी को सामान्य सी जानकारी थी। अध्ययन के पूर्व गांधी के विचारों से शोधार्थी बहुत अधिक इत्तफाक नहीं रखता था। पर गांधी एक महान महापुरुष थे इस बात की स्वीकार्यता शोधार्थी के मन-मस्तिष्क में थी।

प्रस्तुत शोध अध्ययन चार अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय शोध परिचय पर केंद्रित है। इसमें सर्वप्रथम शोध प्रस्तावना के माध्यम से शोध समस्या का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसके अन्तरगत गांधी के मित्र और सहयोगी काका कालेलकर द्वारा गांधी जी की पुस्तक 'हिन्द स्वराज' की प्रस्तावना को शब्दशः रखा गया है। इसके उपरांत शोध में मानवीय मूल्यों की अवधारणा एवं स्वरूप का विस्तृत का वर्णन किया गया है। मूल्य मनुष्य के जीवन को एक दिशा निर्देश देते हैं तथा सही एवं गलत में अंतर करने की तार्किक समझ के विकास में मदद करते हैं। मूल्य की महत्ता उल्लेख मात्र इतिहास में ही नहीं

अपितु विश्व के सभी धर्मों का निर्माण भी कहीं न कहीं मानवीय मूल्यों से सरोकार के लिए हुआ है। मूल्य नाम के मूल्य होते हैं वास्तव में इनका कोई मूल्य नहीं होता है। परिचय के क्रम में हिन्द स्वराज ग्रन्थ के सार का समीक्षात्मक वर्णन किया गया है। हिन्द स्वराज में महात्मा गांधी ने जो भी कहा है वह अंग्रेजों के प्रति द्वेषवश नहीं, बल्कि उनकी सभ्यता के प्रतिवाद में कहा है। गांधीजी का स्वराज दरअसल एक वैकल्पिक सभ्यता का शास्त्र या ब्लू प्रिंट है वह राज्य की सत्ता प्राप्त करने का कोई राजनैतिक एजेंडा या मेनिफेस्टो नहीं है। इसके उपरांत शोध से संबंधित साहित्य का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत सैद्धांतिक पृष्ठभूमि की दृष्टि में हिन्द स्वराज विश्लेषित किया गया है। साथ ही साथ हिन्द स्वराज पुस्तक के बारे में तत्कालीन विद्वानों के विचारों को भी रखा गया है। इसके अतिरिक्त यह अध्याय शोध प्रविधि, शोध के महत्त्व एवं शोध के उद्देश्य भी रेखांकित करता है।

तृतीय अध्याय, जो शोध का सबसे महत्त्वपूर्ण अध्याय है। इसमें अंतर्वस्तु विश्लेषण से प्राप्त हिन्द स्वराज के मूल्यों का अध्यायवार विश्लेषण किया गया है। मूल्यों की आवृत्ति इसका मुख्य आधार है। इसी क्रम में प्राप्त मूल्यों का एक सैद्धांतिक ढाँचा भी तैयार किया गया है। हिन्द स्वराज में प्राप्त मूल्यों को रॉकीच के मूल्य सिद्धांत में वर्णित मूल्यों में समाहित किया गया है। मूल्यों की आवृत्तिवार व्याख्या भी गयी है।

चतुर्थ एवं अंतिम अध्याय में प्राप्त शोध परिणामों को विवेचित किया गया है। विवेचना, सम्पूर्ण शोध को समग्रता में देखने का एक पर्याय होता है। अध्ययन में प्राप्त परिणामों की तुलनात्मक विवेचना प्रस्तुत की गयी है। किसी भी शोध का वास्तविक उद्देश्य अग्रिम शोधों के लिए नवीन अंतर्दृष्टियों एवं प्रश्नों को उजागर करना होता है। अतः विवेचना के उपरांत आगामी अध्ययन हेतु अन्तरदृष्टि में शोध से प्राप्त ऐसी ही अंतर्दृष्टियों को रखा गया है।